

A Report on Training programme “Nursery and plantation techniques of *Juniperus polycarpus* and Cultivation of Important Temperate Medicinal Plants” held at Keylong, Lahaul Spiti, H.P. on dated 10.11.2020

Himalayan Forest Research Institute, Shimla under VVK Extension, organized one day training programme on “Nursery and plantation techniques of *Juniperus polycarpus* and Cultivation of Important Temperate Medicinal Plants” at Keylong, Lahaul & Spiti, H.P. on 10.11.2020. About 40 progressive farmers from different villages of Lahaul valley and Front line staff of the Lahaul Forest Division, took active participation in the training programme.

At the outset **Dr. Sandeep Sharma, Scientist-G**, HFRI, Shimla welcomed the chief guest and participants and gave brief background of the HFRI, Shimla and its mandate. He highlighted different activities of the Institute. During the inaugural session **Sh. Jagdish Singh, Scientist-F and Training Coordinator**, welcomed the chief guest by presenting traditional cap and Khatak. He also briefed about the training programme.

Chief Guest, Sh. Dinesh Kumar Sharma, Divisional Forest Officer, Lahaul Forest Division, inaugurated the training programme. In his inaugural address he said that Junipers and high altitudinal medicinal plants are very important components of the fragile ecosystem of the Lahaul & Spiti region and must be conserved and protected. He hoped that techniques developed by HFRI, Shimla for nursery and plantation of Junipers and cultivation of high value medicinal plants will be of immense useful to farmers and Front line staff of Lahaul valley. He thanked Himalayan Forest Research Institute, Shimla for organizing this training programme and urged them to organize such programmes in future too.

During the technical session, **Sh. Pitamber Singh Negi**, Scientist-C, HFRI, Shimla gave detailed presentation on “Nursery and plantation techniques of Juniper (*Juniperus polycarpus*)”. He further said that the Institute has successfully developed technique for breaking seed dormancy in Junipers and raised thousands of seedlings which were later distributed amongst different stakeholders.

Dr. Sandeep Sharma, Scientist-G, HFRI, Shimla gave presentation on “**Modern Nursery Techniques for Enhancing Productivity**”. He also highlighted the importance of proper soil mixture, manure from green waste and organic farming. He also apprised participants about making of compost and vermicompost.

Sh. Jagdish Singh, Scientist-F, HFRI, Shimla given the presentation on “**Identification, uses and cultivation of important medicinal plants**”. He further given the presentation on “**Inter-cultivation of temperate medicinal plants with horticulture crops: An option for augmenting rural income**”. He informed that the Institute has identified superior genetic accessions of *Podophyllum hexandrum*, *Picrorhiza kurroa* and *Valeriana jatamansi* by screening different geographical locations of Himachal Pradesh and Ladakh and after mass multiplication has been distributed amongst the different stakeholders. He urged the people to come forward to take up commercial cultivation of these high value temperate medicinal

plants as the climate and adaphic factors of Lahaul valley are favorable for growing these medicinal plants.

Shri Nand Lal Sharma, Medicinal Plants Traders, Mansari, Kullu talked on “**Marketing and commercial cultivation of Kuth (*Sassurea costus*) and Manu (*Inula racemosa*)**”. He said that it is high time for take up the commercial cultivation of these high value medicinal plants for sustainable income generation.

During the plenary session of the training, all the experts freely interacted with the participants. The relevant queries of the participants were duly addressed through expert opinion. Certificates were given to participants for actively attending the training programme.

In the end, Vote of Thanks was extended by Sh. Jagdish Singh, HFRI, Shimla.

Wide electronic and media coverage was given to the programme for reaching out maximum number of stakeholders.

Some Glimpses of the Training Programme







Media Coverage



हिमाचल 11-11-2020

जुनिपर की नर्सरी एवं रोपण तकनीक पर सेमिनार, 25 वनकर्मियों ने लिया हिस्सा



शिमला | एचएफआरआई द्वारा केलांग, लाहौल स्पीति में जुनिपर की नर्सरी एवं रोपण तकनीक और महत्वपूर्ण समशीतोष्ण औषधीय पौधों की खेती विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें 15 प्रगतिशील किसानों एवं लाहौल वन मंडल के 25 वन कर्मियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ वन मंडल अधिकारी लाहौल दिनेश कुमार ने किया। एचएफआरआई के वैज्ञानिक पीतांबर सिंह नेगी ने जुनिपर की नर्सरी एवं रोपण तकनीक पर अपनी प्रस्तुति दी और किसानों एवं वन कर्मियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए। एचएफआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. संदीप शर्मा ने 'उत्पादकता बढ़ाने के लिए आधुनिक नर्सरी तकनीक' पर प्रस्तुति दी।



लाहौल-स्पीति हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान की ओर से आयोजित कार्यशाला में भाग लेते किसान व अधिकारी। -हिमाचल दस्तक

जूनिपर की खेती लाएगी लाहौल में समृद्धि केलांग में 15 किसानों ने सीखे खेती करने के तरीके

हिमाचल दस्तक ब्यूरो। शिमला

प्रदेश के लाहौल-स्पीति जिले में जूनिपर की खेती से समृद्धि आएगी। एचएफआरआई यानी हिमालयन वन अनुसंधान केंद्र शिमला ने लाहौल स्पीति के केलांग में किसानों को जूनिपर की खेती के गुर सिखाए। एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में 15 प्रगतिशील किसानों एवं लाहौल वन मंडल के 25 वन कर्मियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ वन मंडल अधिकारी लाहौल दिनेश कुमार द्वारा किया गया।

उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से लाहौल वन मंडल के वन कर्मी एवं किसानों को जूनिपर की नर्सरी एवं रोपण तकनीक तथा औषधीय पौधों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलेगी, जिससे कि भविष्य में वे अपनी नर्सरी एवं पौध रोपण कुशलता तथा किसान अपनी आजीविका कमाने का स्रोत भी बना सकते हैं। उन्होंने हिमालयन वन

किसानों को बाटे जाएंगे वनककड़ी के पौधे

दिनेश कुमार ने कहा कि वर्तमान समय में औषधीय पौधों के महत्व एवं कृषि से अतिरिक्त आय बढ़ोतरी की जा सकती है। उन्होंने बताया कि संस्थान द्वारा वनककड़ी, करु तथा मुश्कवाला आदि महत्वपूर्ण समशीतोष्ण औषधीय पौधों की उच्च गुणवत्ता वाले पौधों की पहचान कर ली गयी है और इन्हें खेती हेतु विभिन्न हितधारकों की बीच बांटा जा रहा है। उन्होंने आगे कहा कि लाहौल की जलवायु तथा भूमि इन जड़ी-बूटियों को उगाने के लिए अनुकूल है और किसान इसे अपनाकर अपनी आय को और बढ़ा सकते हैं।

अनुसंधान संस्थान, शिमला को इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन करने के लिए आभार व्यक्त किया तथा भविष्य में ऐसे ज्यादा से ज्यादा कार्यक्रम आयोजित करने के लिए आग्रह किया। डॉ. संदीप शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के बारे बताया कि यह संस्थान उत्तर पश्चिमी हिमालयी राज्य हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर तथा लद्दाख में वानिकी एवं वानिकी अनुसंधान तथा पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। साथ ही उन्होंने सभी को हिमालयन वन

अनुसंधान संस्थान में चल रही अनुसंधान गतिविधियों के बारे में भी अवगत करवाया।

डॉ. संदीप शर्मा वरिष्ठ वैज्ञानिक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने उत्पादकता बढ़ाने के लिए आधुनिक नर्सरी तकनीक पर प्रस्तुति दी। उन्होंने सन्तुलित मिट्टी, हरित कचरे से खाद के निर्माण एवं वर्तमान में जैविक खेती के महत्व पर भी प्रकाश डाला। जगदीश सिंह वरिष्ठ वैज्ञानिक ने अपनी प्रस्तुति में औषधीय जड़ी-बूटियों की खेती, उनकी पहचान, प्रयोग तथा औषधीय पौधों की अंतरा कृषि पर जानकारी दी।
